प्रकाशकीय....

पर्व पर्युषण गुण नीलो, नव कल्पी विहार
चार मासांतर स्थिर रहे, अेहीज अर्थ उदार

''विहार मार्गदर्शिका'' पुस्तिका के साथ जुडा हुआ यह वाक्य जब आंख के सामने आता है। तब साधु-साध्वीजी के लिए भगवान ने बताए हुआ नवकल्पी विहार नजर के सामने आए बिना नही रह सकता। विहार, विहार के लिए नही है, पैर छुटे करने के लिए विहार नही है, हवा पाणी बदलने के लिए विहार नही है, प्रतिष्ठा अंजनशलाका, उपधान अथवा उद्यापन महोत्सव के लिए विहार नही है, तीर्थयात्रा के लिए भी विहार नही है, विहार मात्र संयम यात्रा सौर संयमयात्रा कर्म निर्जरा के लिए ही है, यह था भगवान के शासन के नवकल्पी विहार का आदर्श।

एक एक मास की स्थिरता की मर्यादानुसार विहार करते करते ९ वा महिना जब आता है, तब उस क्षेत्र की योग्यता देखकर चातुर्मास करने का पूर्वकालीन कल्प यही नवकल्पी विहार कहा जाता है।

ऐसे विहार में विहार से न मर्यादित रहने पर, विहार भी मर्यादित रहता, अध्ययन, अध्यापन, वाचना, स्वाध्याय वगैरे के लिए भी पुर्ण समय मिल जाता है। विहार क्षेत्रो में भी सुयोग्य क्षेत्रो को एक महिने की स्थिरता दरम्यान धर्मदेशना वगैरे का अच्छा लाभ मिल जाता है और वह क्षेत्र भी धर्मभावना में कायम के लिए नवपल्लवित बन जाता है।

आज यह विहार की शास्त्रीय मर्यादा लुप्तप्राय: बन गई है। और इससे कुछ विभाग एकदम विहार से विमुख बन गये है। और कुछ विभाग विहार से पुरा भर गया।